सारांश

मीडिया में महिलाओं का चित्रण हमेशा चिंता का विषय रहा है। चाहे फिर वो खबरों के प्रसारण में हो या अपने कार्यालयों में हो। मीडिया में महिलाओं की समानता और विशेषकर दलित महिलाओं की समानता और प्रतिनिधित्व चिंता का विषय रहा ही है। इस पेपर में दलित महिलाओं के मुद्दे और समाचार पत्रों का दृष्टिकोण छवि निर्माण का अध्ययन किया जाना है अर्थात जब मीडिया दलित महिलाओं से संबंधित मुद्दों को जगह देता है तो वह किस रूप में होती है और उनका महत्तव कितना होता है।

इसमें विशेष संदर्भ के रूप में वर्ष 2014 नवम्बर में छत्तीसगढ़ के बिलासपुर जिले में गांवों की पिछड़ी और विलुप्त होती आदिवासी जातियों की महिलाओं की नसबंदी के लिए जो अमानवीय तरीके अपनाए गए उससे 19 महिलाओं की मौत की खबर आई। देश में जनसंचार के कई माध्यमों ने उस घटना को अपने यहाँ जगह दी। इस खबर के साथ जनसंचार माध्यमों का व्यवहार एक विस्तृत अध्ययन की मांग करता है।

मेरे इस लघु शोध का उद्देश्य मीडिया की भूमिका को नए संदर्भ में परिभाषित करना है, दलित स्त्री हिंसा की खबरों के परिप्रेक्ष्य में। इस शोध में एक घटना का संदर्भ लेकर पूरी दलित महिलाओं की खबरों की कवरेज़ पर बात की गयी है। शोध कार्य द्वारा निश्चित रूप से कुछ नया तलाशने की कोशिश की गयी है, खास कर मीडिया की भूमिका में। हालांकि दलित स्त्री और समाचारपत्रों का दृष्टिकोण के क्षेत्र का दायरा काफी व्यापक है, जिसे इस लघु शोध में समेटना कठिन है। मगर मेरे द्वारा इस विषय को लघु शोध में परिणत करना इस प्रक्रिया में छोटी मगर सकारात्मक हस्तक्षेप जरूर है।

अध्याय – 1. दलित की अवधारणात्मक व्याख्या :

इस अध्याय में दलित की अवधारणा, भारत में जातिवाद, मीडिया और दलित तथा मीडिया और दलित महिलाओं के बारे में बताया गया है। इस अध्याय में दलित शब्द कहाँ से आया मीडिया में दलित संबन्धित

खबरे किस तरह की होती है, भारत में जातिवाद को लेकर क्या स्थिति है। दलित महिलाओं का मीडिया विशेषकर समाचार पत्रों में किस तरह की खबर दलित महिला से जुड़ी होती है। इसके बारे में बताया गया है।

अध्याय – 2. साहित्य-समीक्षा

इस अध्याय में अपने शोध विषय से संबन्धित पुस्तकों, विशेष आलेख, रिपोर्ट, शोध लेख आदि की साहित्य समीक्षा की गयी है।

अध्याय – 3. दलित महिलाओं के प्रति भेदभाव तथा मीडिया की नैतिक जिम्मेदारी

अध्याय - 3 में दलित महिलाओं के प्रति सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक भेदभाव के बारे में बताया गया है , इसमें '(एनसीडबल्यू) राष्ट्रीय महिला आयोग' की रिपोर्ट के आधार पर बताया गया है कि दलित महिलाओं के साथ दुर्व्यवहार होने का सबसे बड़ा कारण है उनकी आर्थिक स्थिति का कमजोर होना । लगभग 51 प्रतिशत दलित महिलाएं गांवों में और 56 प्रतिशत शहरों में गरीबी रेखा से नीचे हैं। कई दलित महिलाएं रोजमर्रा की जिंदगी में कमाती है। लेकिन यह सत्य है कि बेरोजगार दलित महिलाओं की तादाद सामान्य महिलाओं के मुक़ाबले ज्यादा है। उनके पास अछूत होने के पैमाने की वजह से कमाई करने का अवसर भी कम हो जाता है। इस अध्याय में मीडिया की क्या नैतिक जिम्मेदारी होनी चाहिए। तथा किस तरह खबरों को प्रस्तुत किया जाना चाहिए उसके बारे में बताया गया है । इसमें जेसिका मर्डर केस को उदाहरण के रूप में शामिल किया गया है।

अध्याय – 4. समाचार-पत्रों का संक्षिप्त परिचय

इस अध्याय में मेरे शोध विषय में शामिल किये गए समाचार पत्रों का संक्षिप्त परिचय दिया गया है, जिसमे चार समाचार पत्र दैनिक भास्कर, हरिभूमि, हिन्दू, टाइम्स ऑफ इंडिया है।

अध्याय – 5. खबरों का विश्लेषण

इस अध्याय में अंतर्वस्तु विश्लेषण के आधार पर खबरों का विश्लेषण तथा प्रश्नावली के आधार पर आंकड़ों की स्थिति एवं प्रभाव का विश्लेषण किया गया है जिसे विभिन्न चार्ट एवं ग्राफ द्वारा बताया गया है।

अंत में निष्कर्ष एवं सुझाव तथा संदर्भ सूची को शामिल किया गया है।

निष्कर्ष - इस तरह पूरे शोध से यह निष्कर्ष पर पहुंचा गया है कि 'मीडिया पूरी तरह एक एजेंट की तरह कार्य करता है। जिस तरह एक एजेंट अपने सिद्धांतों के साथ चलता हुआ कांट्रैक्ट के तहत कार्य करता है और लोगों तक अपने फर्म की जानकारी देता है, उसी तरह मीडिया भी सूचनाओं का प्रस्तुतीकरण एक एजेंट की तरह करता है। जनसंचार माध्यमों के पास एक ऐसा औज़ार है। जो कही से बंधा नहीं है न्यायपालिका, कार्यपालिका, विधायिका सबकी अपनी सीमाएं होती है, जबकि मीडिया की अपनी कोई सीमा नहीं है। सलिए पत्रकारिता को चौथा स्तंभ कहा गया है। जनसंचार माध्यमों के पीछे हमारा यह उदेश्य रहा है कि इसे सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक औज़ार के रूप में प्रयोग करे। मीडिया के पास जो ताकत है वह असीमित है जनमाध्यम लोक का प्रतिनिधित्व करता है मीडिया अब सामाजिक परिवर्तन की तरह कार्य नहीं करता बल्कि एक एजेंट की तरह कार्य करता है। वर्ष 2014 में नवंबर के पहले सप्ताह में छत्तीसगढ़ बिलासपुर जिले में गांवों की पिछड़ी और विलुप्त होती आदिवासीजातियों की महिलाओं की नसबंदी के लिए जो अमानवीय तरीके अपनाए गए उससे 19 महिलाओं की मौत की खबर आई। क्योंकि यह खबर छत्तीसगढ़ के दलित आदिवासी महिलाओं से जुड़ी थी, इसलिए राष्ट्रीय स्तर के समाचार पत्रों में खबर को ज्यादा महत्व नहीं दिया गया। बिलासपुर से निकलने वाले कुछ समाचार पत्रों ने तो खबर को उठाया परंतु उनमे सामग्री का अभाव रहा। इसे मीडिया के इस सिद्धांत के द्वारा समझा जा सकता है जो , मैकॉम्ब और डोनाल्ड शा के एजेंडा सेटिंग की अवधारणा (१९७२), डीफ्ल्यूर एवं बॉल राकेश के मीडिया सिस्टम डिपेंडेंसी थ्योरी (१९८९), जिसमें यह बताया गया है कि समय के साथ मीडिया की कई चीजें अप्रासंगिक हो जाती है) तथा लेजरफेल्ड की ओपिनियन लीडर की अवधारणा (१९४०. ४४) को आधार बनाकर तैयार की

गयी है। यह नवीन सिद्धांत बताता है कि सामाजिक मुद्दों के प्रस्तुति में मीडिया ओपिनियन लीडर की भूमिका में हो जाता है और लोग एजेंडा सेंटर की भूमिका को अपना लेते हैं। मीडिया को ओपिनियन लीडर इसलिए कहा गया है क्योंकि यह खबरों को बाजारी शक्तियों के आधार पर अपने तरीके से अन्य जगह पहुंचाता है। इस खबर में मुख्य मीडिया हाउस ओपिनियन लीडर बन कर मुद्दे को अपने तरीके से उठाया और बाकी मीडिया हाउस ने उस सूचना को ग्रहण कर के प्रसार कर उसे आगे बढ़ाया। और उसे लोगों तक पहुंचाया। वही दूसरी ओर नसबंदी कांड में लोगों द्वारा एजेंडा सेटिंग की कमी रह गई और इसलिए भी खबरें उस तरीके से नहीं आयी।

सुझाव :

प्रस्तुत शोध को लेकर कई तरह के सुझाव भी सामने आये है, जो इस प्रकार बिन्दुवार है :

- दलित महिलाओं को न सिर्फ मीडिया द्वारा बल्कि समाज के द्वारा भी नयी भूमिका में देखने की जरूरत है।

- शहरों में शिक्षा होने की वजह से समाचारपत्रों के कारण महिलाओं में परिवार नियोजन जैसी योजनाओं के प्रति जागरूकता आई है परंतु गाँव के स्तर पर कमी दिखती है। ऐसे में सरकार को समाचार पत्रों के माध्यम से उनके ग्रामीण संस्करण के द्वारा परिवार नियोजन के प्रति लोगों में सही समझ विकसित करनी चाहिए।

- मीडिया बाजार के अनुरूप दलित महिलाओं से जुड़ी खबरों को छापता है, यह सही भी है परंतु लोगों को दलित महिलाओं के साथ हो रहे अन्याय के प्रति जागरूक करना चाहिए।

Summary

Portrayal of women in media has always been considered a matter of concern. Whether it's about their working participation in News Media or its about coverage, in both context she is subjugated by the whole patriarchal society, especially the *Dalit women*. This paper is focused to study the coverage and image building of Dalit women through newspapers. On the way, it can be said that this is a study to understand the Media (Newspapers) behaviour on treatment related to Dalit women issue. Whether it provides coverage, space and importance to Dalit related issues or not.

In November 2014, the sterilization issue in Bilaspur (chhattisgarh) has taken as a reference to study. This sterilization issue has raised ire in the all over country. It led to death of 19 Tribal women (as newspapers has covered) who were having less in terms of population. This issue were covered by mass media also but media's coverage trend is matter of study to understand the media behaviour.

Purpose of this research is to define the role of media in the new context . In context of violence against Dalit woman. An issue has taken as a reference to study on coverage of Dalit women in newspapers. Certainly, this research has tried to explore new trends of media coverage and it's role. Although this area of research has very broader aspect and it was very difficult to limit this. But to change this broader area into thesis is certainly a small but positively an important intervention.

Chapter - 1. *Dalits* as its conceptual interpretation

In this chapter the concept of Dalits , caste in India , the media and Dalits and Dalit women and the media has been explained. The word *Dalit's* origin has been traced, how it came to media, what's the trend had been in media and what's the present scenario is in terms of caste exist in India are dealt. Also, the trend on the coverage regarding Dalit women has been disscussed.

CHAPTER -2. Literature review

Books related to research topic in this chapter, special articles , reports , research articles, etc. literature has been reviewed.

CHAPTER -3 Discrimination against *Dalit women* and the moral responsibility of the media

Chapter 3 explains the discrimination against Dalit women, social, economical and political discriminations has been discussed. National Commission for women (NCW's) report has taken as a source of Data to

explain the root cause of exploitation against women and How she suffer or bounded to be abused because of economic crisis. Approximately 51 percent of Dalit women in villages and 56 percent in cities are below the poverty line . Many Dalit women in everyday life earns . But the number of unemployment among Dalit women is much higher than the women belong to socially advanced section of society. Moreover because of the untouchability, the scale of the opportunity of earning get reduced .

This chapter discussed on the moral responsibility of media and why it needs more sensibility while reporting has explained. A case study of Jessica Lal murder case has been included in it.

Chapter 4 - A Brief Introduction of Newspaper

This chapter includes brief summary of newspapers , The four newspapers which I have selected to study, *Dainik Bhaskar* , *Haribhumi* , *Hindu* and the *Times of India*. How and why these newspaper has taken for study has been discussed. Moreover, little bit historical background of newspaper and its orientation has been touched to understand the nature of newspaper.

Chapter - 5. Analysis of News

This Chapter is all about explanation through research method which I applied in this research that is *content analysis*. News analysed through this method and questionnaire applied to analyse Data and impact. Chart and graph has been used to explain all the data.

Finally, conclusions, suggestions and reference list is included.

Conclusion - This research has reached at a conclusion that the media acts solely as an agent . An agent works with the principle of contract and explain about information related to firm. In the similar way Media do.

Media is a tool which is not liable to anyone as Judiciary, legislature and executive has this is the reason it is called as fourth pillar. The basic motive for using this tool for the upliftment of socially, economically and politically weaker sections of society. But unfortunately it does not work as it has its responsibility.

As I have discussed about the sterilisation issue, media covered the issue but there was lack of sensitivity , moreover the superficially it has been covered. This issue has not even raised nationally. This could be understand through theoretical explanation given by Macomb and Donald Shaw, the agenda-setting concept (1 9 72). Diflur and ball Rakesh Media System Dependency Theory (1 9 8 9), which explained with the passing period of time many things get irrelevant. The opinion leader concept of Lejrfeld (1 9 40 . 44)

theory explains that the presentation of social issues in the media prepare opinion through leaders and then people grab the opinion gradually. This is the all reason why the real issue could not been covered or get changed while flowing at lower level.

Suggestion :

The research presented the following suggestion.

- Dalit women should not looked through media only but also in terms of social perspective.
- Newspapers in the cities has brought education among women. Women understand issues like family planning but there is lackness at village level. Government should start village edition newspaper which could be circulate at village level for making them aware.
- Society needs to get change regarding adopting positive attitude towards Dalit women and it is the media's responsibility to make people aware.